नं. ५०५४

निरुक्तोत्तर षट्कस्य प्रतीकानुक्रमणिका

x x x x

पत्र. १ —————— सं.

वेदाङ्ग. ५.

स्तो
३१०

श्रीगणेशाय नमः॥ ॥अथातो दै॰ त॰ आ॰ व॰ १ इं॰ द्र॰ मि॰ त॰ म॰ ना॰ त्व॰ रि॰ मा॰ उ॰ म्ना॥१॰ प॰ सु
मं॰ अ॰ षीपो। अ॰ स॰ न॰ ता। सु॰ से॰ भो॰ से॰ निं॰ चे॰०॥ ति॥२॰ न॰ स्ते॰ ग॰ स्म॰ स्य॰ सूप्र॰ नि॥४॥ अ॰ प॰ गो
॰ प्र॰ प॰ ए॰ प्र॰ सं॰ प्रह्र॰ तरे॰ यः॰ रघो॰ सू॰ स्मा॥५॥ ति॰ नै॰ ग्निः॥ वा॰ स॰ स्ता॰ दे॰ कै॰ त्यपि॰ का॰ भूं॰ तू॰ धी
॰ त्क॰ मं॰ तिव॰ विभ॰ स॰ सं॰ चो॰ यथा॰ मत्व॰ प॰ स्त॰ चहू॰ ययू॥ प॥ स्तं॰ चा॰ वा॥६॥ अ॰ का॰ प्रु॰ न्ये॰ वे
॰ त॰ स्म॰ पो॰ रं॰ ते॰ कं॰ त्वे॰ अथा॰ इ॰ गौः॰ आ॰ ते॰ अ॰ पो॰ कैः॰ क॰ प्रिः॥ आ॰ वा॥७॥ अपु॰ न्यु॰ म॰
पु॰ त॰ वां॰ सः॰ दृथि॰ प॰ च्छे॰ न्यचे॥ य॰ घे॰ सौ॰ दूं॰ रि॰ स्तु॰ नहीर्ये॰ सो॰ क॰ से॰ हो॰ ग्र॰ रे॰ भ॰ र
पि॰ पुभि॰ ए॰ यः॥८॥९॥ ति॰ त्रु॰ त्रा॰ थ्ये॰ म॰ यं॰ ग्रा॰ व॰ त्रि॰ पे॰ ताः॰ प्र॰ पीपृ॰ या॰ कु॰ व॰ हू०॥ दे॰ यु॰
र्षिं॰ वि॰ म॰ हृ॰ संस्त॰ इ॰ राः॰ प॰ आ॰ चहू॰ न॰ संस्त॰ हृ॰ श॰ था॰ हृ॰ नी॰ स्म॥ ति॰ पू॰॥ ष्म॰ः॰ प॰
इ॰ सै॰ भू॰ गो॰ स॰ सो॰ श॰ पृ॰ म॰ ॥१॥ अ॰ सु॰ विं॰ दृ॰ त॥२॥ अ॰ नी॰ मं॰ मा॰ ग्री॰ पुं॰ पे॰ मध्य॰ था
॰ र॰ ह्व॰ रिं॰ हृ॰ पा॰ अ॰ ग्निः॰ पू॰ प्रे॰ पर्वं॰ र॰ व॰ स॰ पू॰ स्मा॰ रु॰ वा॰ स्यः॥३॥ अ॰ मा॰ न्य॰ व॰ स॰ यु॰ राम॰
॥ उ॰ प॰ था॰ र॰ हा॰ र॥ प॰ व॰ सं॰ वः॥४॥ ए॰ छ॰ म॰ श॰ वै॥ प॥ हे॥ न्म॰ शि॰ नि॥५॥ मं॰ वै॰ स्त्रि॰ २

ऋग्॰ ६ रंगैः॰ ६

सं·६।ठ क्षि·कं।०।कि·कुत्र·चत्तु।ठ्ठा·चु·ह्वे·हां।७।हू·सं·त्रि·का·ता·वृह्ह·ते।८।जगती·ज·वृ
र·ज·ग·जाध·प·चि·त्मा।हू·वि·हृ·।पि·हा॥।९।इती·स्र·ह·स्तो·ता·मू·घ·नृ·मा·जस·या।स्तो
।ता।स्तो।हता·मृ·घ्यां।तत्त·यथा।पोक्षि।२०।२।अ·तु।ग्नि·स्त·ग्नि·स्य·ग·सनम·नति·१ अ
·मञ्च मी·पू·पु·फ·पो·र।पुरा।२।अग्निःति।अ·रा·या।अग्नि·मः।३।अग्नि·वृ।हाः·अभि·स·
स·सम·सं·कल्माः।घृ·सान·वा।ता।हर्यो।भि।सु·सा।मन्प·य·।४।इंद्रक्षि·श।कुः।६।महां·मे।व
नी।मग्निं हि·ग·गर·सु।या।य।घनि पु।मि·ते।२।३।जा·वे·जा·।वि।जा।जा·वि·धु·वि।ना·प्रग
य·जा।जा।·स्व·जा·स्त·म·भव।१।जातवे·म·ग्निः·जा·द·वै।वा।प्र·सो·र्धः।वा·नि·ना·
ना·त्तिं·परा·२।प्र·इ·प्र·का·हां ती·त०जा·गा·य।हा·तत्ता·मन·या।स्य ·जातवे·मः।अभि
·वा·तसु·तमथा·उ·मो·यस्तु।जी·ते।४।वि।रः।हि।त्र·वि·शती·पि·चे·सम्भान·वे।स्या·ति।१।वे
·न·धाः·रा·इते·रः·सं।रा·भा।मभिश्च·स्त·वं।वे।का।राया·म·त·वै·म ति।२।प्रनु।रा।प्र·गीभि
·महि·व·म·मे।प्रक्षि·तमा।घ्रत्ते·द पः·मे·का·३।प्र·मा·क्रा·स्ता·हो·वे·स्त।तेता।मध्या।सो·

ता·मि·म·इं·ति·४।अथा पिवे·हा·स्ते·हुर·थापि·स मो·ग्निर्दै·नरइ स थापि नि०सा·मा० ष्ट्रा मि से० घा
२ वा० स थापि छ्रां। सो·हि वि·से ष·स था·ह·म वति।५।अथ मे·शा·द्विष्वा·वे·पं।ज्ञा।क्र।ज्ञा·घ।तेः
हृ लि पो·म·वता·स्तु·नुः·श·प·उपा हृीत्रिः६।अथा·प्र·न·ह·वै।ति।ने·त्म ता·त्मा·से·नरइ।घस्त
स्रोः·ते·७ अथस्ते० अभवि·त्रा·घ्नि·स·स्रा·वैश्वा० प्रं०त्यग्नि० स्तो·दृ·वं०म·ते।८।समा·पु·।इ
·ता।८।प कुस्नं ते·कृस्नं·हस्ते·प·सह।दु·दि।हृय ४।घ्ट।स्मु·जि·सं·पा·मा।स्तो·हृ·स·धा·मया
·ग्निः·य।घथो।प्र।च्छि·इ स्मा·ता।१।वैश्वान·ती त्य·वं स·सो०ए·पं० च्च यथो ब्रा ति बं० ब्रा·ति ष्ट·रः
स·वे०रो ब्रा·ति घ थो·त्सो·वे·नरी·स स्पै·सा·तियो·से ष वि·प·छ्रां०स·तद्भव·ज·रा·ज·म·म·रा
हृ·म·य·ह०सो०स·ति।२।हृविष्वा·त·म·ता।हृ·विरि·ष्ट·त·म·मा·धा·वै·स·क·र·हृ।३।अपा·अ·
अ·म·अ·ष्ट।भि यु म्ह·पि·वाह।दृ।दि।आ।द्वि।स्मि·मे·मा·न मा·मग्न·वा·स्वपि·मा
।धिनि·धै·सर्वा।ति·म·ति।४।मृ·र्द्धा·नृ।मा।नृ।मू·मूर्द्धा·मव·न·त्सं·म·हेय ति·हे·य·तस राम
वी म च्छु·त्व·घ।५।स्तो मे·त·पाः स्तो।ह।भज·पत्का।घ।पृ·तमज्रु वे स्त्रे।ष्ट·म।हि० ष·हे·तह·ब्रो· २

नह। ला। सो म थै॰ ति॰ २ यद्दे। य॰ स स्तु। सा व॰ मि। म्नि॰ । म्नि। स्तु॰ स्तं काव॰ प॰ स॰ न॰ ता॰। मि॰ पे
।पिथं। ता॰ नु। थे॰ ग्री॰ ति॰ ७ ।पत्रा॰ ते॰ प॰ राद॰ म॰ क॰ पु॰ भू॰ ता। हृम॰ स्त्र जह्ने॰ पृ॰ नां॰ कृो॰ त। घु। प
याव॰ स्वे। नू। म वु॰ प्रति॰ मि। स्तु स्त सा। प्र॰ इहे। पु। रपे॰:। नाए॰ त्र। ओ। घु। हो। न्हो। स्वनवे॰ ति॰ दे
प्रि॰ सह। ती॰ सवि॰ माह म॰ म। भ॰ पा। पा॰ वैं॰ वि॰ मे ए॰ भा॰ भ॰ ते॰ ।०।६।७। द्विाष॰ य॰ व॰ य॰ त ति। २
।द्विवि॰ द्व॰ ने। ह॰ सा। द्व॰ हि॰। नि॰ डु॰ स॰ । मि। या। या॰ वा। घृ॰ न॰ कों॰ र॰ स॰ हा मि त्त॰ वु॰ ते॰ पाह्ला। घा॰ द्रा॰ हा
या। हा॰ हैयो॰ नयथा पातु। ह्रा॰ सा॰:। तेषां। त्रस्मे॰ व मथा॰ वेंतसो॰ नथा॰ द्र॰ द्राः इति॰ १ अय॰ आ॰
रा। द्रा। प्र। हे। तियथो॰ ए॰ श॰ हूँ॰ स॰ से॰ वि॰ या॰ हा॰ चा॰ न्स। रो॰ वु॰ म॰ त॰ हू॰ नं॰ नु॰ यहू॰ य॰ र॰ द्रा॰ हे
त्तू। दा। हे॰ ति॰ स॰ ति॰ यु॰ त्रेषा पु॰ भाय॰ स॰ य॰ त्सो॰ नं॰ ते॰ सो मं॰ या॰ द्द वि॰ पि॰ द्रा॰ र माति॰ ७ मे
श्रा॰ भि:। मि॰ व॰ वायौत्त॰ ह। पूः। त्व॰ घी। हि। हि। ध्वि॰ म ध्वि। हि। धी। धी। ति॰ व॰ मा॰ पा। जे॰ भि:॰ ते॰:। ८
म। श्रा। आ॰ क। प्री। प्री। ता। भ्म॰: ति। २ समि। आ। ता:। मा मा। म॰ हो आ॰ श्वे॰ तु॰ प्रा॰ य॰ भ्र॰ नि

३

शा· स्तनू·त्र·याः प्र· ना· नि· गौ· त· श्रा। मो। स्तु· पू· पा· श्रि· शा· रा। त। श्रं। ता· ज्ञा· ङु· ए· जाः नि·· २

त नू· कृ। म· नः। त्· स्त्र· न्म· स्व· कृ· म। धी· र्य· हे· श्रो। गा। नु· शं· पा। कु· न· श्र· म· शा· नि रैश्च। ता· भ· नि

·३। न· पे। घा· व· र्ये· रा। रः। मो। म। वे। तं। जा। गा· वे। ना· नि। ४। आजु·ः। त्वं· नू· आ। हू· व· स्तं· य· ज्ञः नि

·स· नू। रा। ग्रे। श्री। म। त्र। स्मो। नि। ५। प्रा। वी· सु· नं· प्रा· ची· वु· प्रा· च· ता। वि· वि· व· हे· स्मो· स्तु· स्म। रव। स्प्रा

हा। दू· वा· ता। नि· ६। श्रव·ः दे·ः मेव· पा। स्मृह· ज्ञा। उ· मे। धर्मे· गा· व· मं। मू। हा· वि· नि· याः· खु· श०·

रू· षा। म्यु· न· ना· रा· न· मृ· पो· पि· नि· ७। आस्तु· हि· ने· से· वृ। स्तु। घा। सी· मा। य· हि· ह। मा· स्तु। स्र· सु·

। स्त्रि। स्तु। र्त्व। पे। शा। रू। पृ। र्व। नि। हि। रा· दै· ता। स्त्र· नि· ८ दे। मा· प्रा। प्र। वो· दे· भि। मत्तु· य· ना। प्र· प्र

· प्र· हि· नि। स्ति· ला· नि· ९ श्रा· नी· नि· ६· ए· श्रा। हि· ला। भा० मा· हिहनि· वा· स्तु· श्रा· त्व· नू· म· नै

· स्ति· ही· स्म· ल्ल· त्क· स्त· नि· १० यद· ता। त्रा। प· रू। स्तं· न· न्देवं। यज। वि· मा· स्ता। मी· नो· शा· स्न· प रा

नि। ११ आ। वि· उ· ने· श्रा· न· वा· व र· ही· ने· हि। मु· हु। स्व। ॐ· क· त· घा· वि· र· प्र· ने· १२·२ व· नि· १। राम·

उ पा· व· उ· हे· काः रि· त्र· स्य· दः। व प्र· च ता· नि· शा· पा· रा· २ अं· नं। पा। अं। ज। हि· व न· म· दे· प्र से ३

स्वा·श्रिद्·स्त्रिय।ह्म।स्माउ।ग्रि।शि।श्या·पृसा·३ दे·वो॰ यं·प्र·श्वेः।दे·हि·स्र·पि·स्मा·त्रुय·प्र·अंर्थस्·
ते·श्रे·र·प्र·रि·तस्रे·पुरा·४ वृत·रश·पिष्ठे॰ नू·वृ·हि·चः वृत·स्तुरू।न्म·नि·प्र·षिग्र·स्व·हा
हा।ह·वा·ध्रा·स्वा·हा·तासा·मवु।धा।सघो·गाः अ·वाः·स्घो·नि·म।म·[illegible]·स्वा·र·अ्या
·अ्र·किं·पुया·श्राके·दाप्रया·ला·गं।पृ·वाः।तवु·लक·तो·गाः।नवाग्ने·स्वृः।आग्ने·ग्रा
गो॰ अ्र·छं·छु·मृनु·पश्र·नु·प्राण·घा·अपा·अं·मात्म·मा·प्रया॰ प्रज्ञास्त्र·माग्रे·भं·त्किं·य·
त्रो॰ नामे·मेका·पृ·ते·मा·वा·स्वृंगा·ना·मे·थं·दै·पै·मि·वृंस·त·[illegible] ति।७।८ अथया·[illegible] ता
·ले·स्व·ति·१ अम्बोगा:·शे·व·अश्वा·हु·क·म,ति·२ माना·न·प·ति·पृह्वाति·[illegible]·र·प्र·घा
मा·मि·पीदु·रूद्रूवो·गा·स्त·म·हु·स्क·ठ·त·स्व·श·त·ति·३ कृति·वं·ह्व·त·त्स·के·म·मे
·मी·पि·[illegible] मव·ल·गि·ग्टि·गि·नि·वाग·मं·नम·पा·मं·मा·हृपि·मर्व·पृ·ति·४।मदृ·म·ल·र
तिर·त्स·र·त्सो·[illegible]·र·त्स·मेधा·र·गा·स्त्तु·म·म·म·त्मह·मो·[illegible]·मं·त·मं·म
उ्रा·मो·मं·म·मुते·ति·५ सव·वा·पुः·संव·ग्रा·व्र·अपि·व्र·वा·पा·व·वर्ष·प·तं·मं·अ्र·स

न·ष्टू·ति ह्उप·सिम·हः·इति·ह्मा·म·ते·मु·७ स्रावे·ना·सो·वि·नृ·श्रृवे·वि।प्रवा·रि·रुपा
५ ·न्य·हेयुरू·मो·मृ·जा·।मृ·मवे·मु·न्मुं·वि·तरुषी·ष्टी·षु·गं·रू·पी षी·त्रि·।त्रि·न्तो·न्म
न्त्रय·परि।से।ग्रा·हं।ग्टं।ष्ट्·ते।भ।८ प्रैते।ङ्ग्र:।प·तः।प्रव।ग्रा·प·पर्वान्नो·सो।पू।ग्ट
।येन·तेस·मेत्रस्त·भे·८·श्चम·सिं।पो·मा।नः।श्चमं·तवा·नल्मा।म्प·श्च·वांवा·वु·वल्मो·श्रु।
घृत्नी·म·त्तु·प्रू·क्षिं।रान्तो।नि·तू·तू·त्व·प्र·नः·१०।१।पड्ड·शानि·र·रृ·गी·क्षि·द्वि·र६प·
तसे·म·१वन·गो·वन·प्र·क·गो·संस्तं·सा·।उं·क्र·उ·ह्वधा·स्ताति·२ ७१। संउन्·उप
·च·व·वि·ह्वा·रेंज·प·रं।स्त्रहृ·हूनि·रि।तं·प·२ वह्नी।२·नः।वह्नीषु·रस्नवावु।से·सं·प
ह्न।भ·५ श्राहि।ह्।तः·श्रा।।स्पा·ह्व्प्र·वति·वुं·भी·त्तिषा।१ रपे·श्रभीपः·रथे·पृ·मा·सा
ह्वग।र्धा।गीवि।धृ।स्त म·६।धन्वु·धं·म·इति·समहः।सं·र्मा·।द्वाप्र·तस्रार७ वस्·ना
·पो·नी·वह्स·प्रि।प·पो।वि·ड्पो·तीषु।स्तसे·भ·८ सुप·प·नृ·सुपमृ·मृ·वींगो·यंत्र·सं राम·
·वि·तिचन·शमि·रांसि·कशा·चका·मय·स्त्र हाकुनः·प्र·म·नुवशा·कौ·मु·रति·८। ५

शे· शिष्ठ वीराणेत विमा।उ।मे· ति· य· ति· रु· ति· वाच प·· तस्मै ५।भुव· हाय· म· इति· पं
· त स्त· ति· ५।यो अ· षु· अ।प· या· पत्ते· ग्रभि· पा· नी· प· स्ता· ति ६ परे· नं· कोस्म· परे· या
ग· ऊ· नि· दुम्न· त· वै· य· तिऊ· ग्नि· य· तति ७ सने· का· य· तंदु· हं· इति· भावे· स· भ· मत्व· ही
य· ति· यु· रायेजा· पु· घा· नंत· न्हं· ति· तं चर· ५ घा।ऊ· व· वसं· बधाऊ· सं· ऋा· ठवामे· भित्स
मेद· तस्मे ति· च· पित्रो· वि· त· मि· रहं· मित्र· ए· गीच· मि· र· त्र भिवि· क्रम· कू· भ· विा ष्टे· मि
· व्या।नु।र्हा कः तस्मे ६ हिर· गात· समाहि· र· राप· हि· वाग· निय· गु· स्पाट· ष· स· भू· स
का।वि भो· सर· तस्मेति १० ये· ते· इति· ना।११।१२।वि ष्णुाति।१ विष्णु· कुा।ठेऊ :क्रि।ष्टा।भू· कं· कं
· गा· मा· नु· ङ्गि· ता· स। तेभ्य: ऋा।हि· स्ता मेत· त्रे· स· विक· धा· वि· प· र्शोथि· न्नेन· मानि· नी।:एपे०
मातार· ऋा। त्वामि न्ने०सा· त त्रे०वि· भौ· सर्वमे· स· पू०त्व· सन्न्ना· मप्प· तद· यरमा।नुकूल· ५ वि सबा।लु
स्तु।वि· ह· ख· चाहि सुरूप· सप· इहा· म· प· तु।स्ती।।ति।तस्मै ३ मपू।नां· म· तं· मा।जू· दे· गा· श्री
स्व· मेजि· क· प ता ४ सघस्त· सहा।त्रेस· चा· सतनो· सर्प सह· शान्म· सा· प्र· मे· रा: कौ

मनसषीलानिज्योतीषि ४

६ मसुं·स्तोमे·म·५ नयाति·पाःस·हा स्नि·अग्नि·अ·क·दृष्टि।स्तस्मै·ति·ए अादृधि·पा·स्त·स·वा
·सि·अा·ना·सूप·स·वाजी वे·त्से·म·वे·मा·मधु।र्धि·सवि·स्वर्ने।तस्मै·७ सवि·ता अा·इं·स·द
सा।दा।हृदा।दु·मेघव·म·म·ता।सं·का।सं·तप स्तुन्हि·तदृति·८ हिर।न्ना।गा।हा।हि।एम·गप मा।ति
वे.४ सं·सवि।जु·वा।अा।त्रा।त्वा।स्तस्मै।९ हे।हे वः०पु।·वकु·मा·भू·स्कर·म·हे०अ०फि या।स्मे स्त्री स्ता।ष्वा ४ त्येन.
स्पा।·म०अस्तु·वा।ति।१० वातन्त।वा।शं·प्र·रमि०स्तस्मै ११·प्रति·म०ते·सो·मोमे·छेतिकम·प
रा·१२ अग्नि·म·मा।पूर्व स्वंमख्नु यसो·छेति।१३। पाहः।वुनोति।१ अयं ने इति।अयं।प्रा।आ
पा।मो·अ·हा·ज।रा।ज·पाग।जर·सू।वो।मे·चे शि·भी।रि।लिव·पू।नी।वा।शि·मा।शि।द्वि·प
त।ति।२ अा।स्तु·रा।अस्तु·चि·प्रा।अा।र·स्पा·सद·र·तेभा·प्र ते·स्वन्तो।स्त३ सत·न·त·त·यो
·प्रा।नृ·पिक·न्तगा·वा।श्रोत्रः·क·स्वा।न·मन्तु·देउरित स्मै ४ प्रत।हा।रा।सनि।अवा।प्रवा।दु·
·ह·हा।घ·त्र·मन·।रा।सा।रं।वा।अव·तहु।दा।सप।मस्पे।तेफ हो।हे।ता।छे·शी।पुह।स।पु साम·
हा।शे।वे·मा·सप्ता हे।नाम।नि·सतेपा।ह·वे·प्रजा·पा·तस्मै।५ प्रजा।य।णि·प्रा।य·वा।रु·शी ६

इपे नो॰ ति॰ २। आहारः। आ॰ हू॰ स्यत॰ सो॰ सं॰ तं ह॰ त॰ वा॰ म॰ हे॰ सा॰ उ॰ ये॰ च॰ नै॰ ते॰ मः॰ २। स्वादि॰ इं॰ ३। इ॰ षे
मं॰२ ॰चं॰ गा॥ ३। सो॰ मं॰ धि॰ नां। सो॰ चूः। सो॰ तिनः मायज्वे॥ स॰ यु॰ म॰ सो मं॰ पहुः॰ सो॰ अ॰ स्वं॰ न॰ देव॰ चे॰ वा।
॰४। यत्वा॰ नः॰ तिः॰ यु॰ त॰ ता॰ पूर्वि॰ पु॰ वासुः। दी॰ सा॰ स॰ सो॰ वि। स्वं॰ च॰ स्वप॰ चं॰ चा॰ मा॰ चे स्वं॰ का॰ स्वं
। तिवा चि॰ च मेर्वि॰ तसे॰ ५ न वो॰ मा॰ युः। वि॰ पूर्वी। हि म॰ माङ्गा॰ य मिम॰ प॰ म॰ मादि॰ हि॰ इमे॰ भूा॰ नि॰
उा॰ प्रवु॰ चं॰ मं॰ तोम॰ श॰ म॰ ६ पं॰ त। च॰ नू॰ प॰ क्रो। क्र॰ मृ॰ क॰ मैतं॰ तिमत्सों॰ म॰ सु॰ ते। ७। त्वे ब॰ या
॰ इति॰ वि॰ सू॰ ८। प्र वो इं॰ तः॰ प्रार्वि॰ तिमं॰ ध॰ न॰ मं॰ मे॥ स्तू॰ श॰ वि॰ वैवि॰ ये॰ प्रातोस्तु॰ मह॰ प॰
वान्न्हत॰ का॰ पश ९ उदु॰ त्व॰ उहू॰ र॰ स॰ धा॰ ति १० धाता॰ व॰ राः॰ धा॰ प्र॰ व॰ का॰ मृ॰ स्तु। वि
॰ सत स्ये॰ व ऊ॰ वि। ११। सोम॰ त॰ यु॰ इ॰ तः॰ सो॰ नम क त्न॰ क्रो। अ॰ छे॰ त्राः॰ क॰ कि॰। विश्वाः १२ पा
हः॰ १२ अया॰ त्याम्रे॰ म॰ स॰ पि॰ चिम॰ ते॰ ति। १। आ वि॰ रोर्मः। याः। चि॰ मड्डि मे॰ स्व॰ स्वर्चे॰ स॰। भि
नोत॰१ र॰ स्त॰ म॰ रू॰ प॰ र॰ पत॰

7

त्वि॰ मा॰ सप्त॰ इं॰ नाम॰ नि॰ स्तेषां। ह॰ दे॰ प्रजा॰ पा॰ ह्येषे॰ । प्रजा॰ य॰ राणं॰ प्र॰ य॰ व॰ र॰ स्ता। द्व। अग्ने

न। अस्त॰ तु॰ मंहा॰ अ॰ आपहृ तीदा। हु॰ वु॰ पा॰ यो॰ ने॰ ने॰ ति॥ ७॥ मानो॰ पोः॰ मा च॰ न्म॰ सु॰ ल॰ ति

र॰ एकेः॥ ते ए॰ एकः॥ ति स॰ भू॰। विष॰ ते। रूस्त्वेद्वष। र्ध॰ यो॰ भ॰। वस्मास्वा॰ ते॰ वा॰ क॰ स उ। सुहृ॰ ता

नि। ८॥ मा॰। या। हा॰ पदे॰। य॰ स्व॰ नमो॰ म॰ पु॰ रा। स॰। पाव॰ दाः १० व तुर्थपादः॥ १०॥ धा

र्कि॰ व॰ पत मा॰ क॰ का॰। प्र॰ रु॰ त्मो॰ ॰॰ आरु॰ न॰ इ॰ वं॰। ओ॰ इ॰ इपं॰ प॰ को॰ स्त॰ इ॰ हि॰ वइ॰ तं॰ त॰ रु॰ ए

॰ सो॰ ती ति॰ व॰ व॰ ने॰ ति॥ १॥ विष्टी॰ मा॰ स्तुः सो॰ भि॰॰ रू॰ क्लि॰ वो॰ मे॰ मत्तारसो॰ स॰ सू॰ वास्॰ सं॰ स॰ धी॰ क

॰ सं॰ वि॰ वाज॰ स॰ त्रयः॥ वृत्ते स्रु॰ व॰ व॰ नम॰ त॰ वम॰ वहू॰ वृमाह्मात्। अ॰ पा॰ अ॰ आ॰ यत्त॰ पा॰ पाः॰ य

न॰ तू॰ स्तेषा। ३॥ विरू॰ सः॰॰ ने॰ रो॰ व॰ गा॥ ४॥ ते अं पु त्र मेर॰ न्मत्ते॰ ५ उदी॰ आ॰ पो उ पि॰ स्व॰ ६॥ अग्नि॥ ०

सः॥ ने॰ मे। अं॰ पि॰ नव॰ नव॰ य॰ से॰ सोषी॰ क॰ मृतो सु॰ म॰ म॰ मा॰ क॰ मा॰ ह॰ ने॰ पितर॰ महते॥ ७॥ स्तु राम

र्य॰ रः। वान॰ इ॰ स्ते॰ आ॰। ८॥ सु॰ ष॰ ना॰ आ॰ रि॰ सो॰ हृ॥ सुरु॰ मी॰ मा॰ नामा॰ सान्ह॰ स॰ दा॰ ति। प्र॰ मा ७

॰ वहू॰ सा॰ मा॰ ८॥ पाहं॰ अथा॰ म॰ विमा॰ स॰ नी॰ वेस॰ तावस्या॰ १ हृत्॰ सि॰ स॰ ह॰ ल॰ क॰ रा॰ प

स्मेस्तुये॰ पितरो॰ यम॰ पिः॰

रि·वि·प·हू·मा·नू·श्र·वु·अर्ये·स सभा ए·रसा·सं·स·ती·बि·रू·ज·का·स्व·इन्तु·ए·च·दिशी·अहि
।न·स·भितेरे·प्र·अग्नि·न एसे।३।यसो·पं·म·य·ना·म·सकृ·ति·आऊ·गमे·ए·वि·भि·सु·धामि
पं·का।प्र·सन्न स्या·ति·३।किभि·चै·कारः।कि मेरुं·हूर्जे·नेः परां·ना स्वधे·कैप·परि·नकंम्न
कर्मे·न कर्मे·न·रु·स·क·रः त्रिस्ते·श।राग।कु·नि·ता·नी·वा·दे·प्रहि·पाशि·ससु·नेस·व्या·न
रा।४।पा·व·सर्तं·पा·प·क·कास्त ए·पुरा·४ महो·धियो·म·प्र·के·प्र·केभू·मा·वि·वा·न·वागवा
ए·भ इ।५।इहा·द्वी·च·म·य·मरा·रा·इमन·च·सीतिष्ठ·य·प·ए·प·रा·देवी·वि·सा·तुं।दे·स
कीत्व·सा०नूच·धे·ग·नु·रा·पो·पू·पोसा·पी·रा·नु म० रा।६।अन्वि·धिाके·घन·अ·सु·त्रे·प्र
आ·रा·स·ए·।७।ए·का।सी·कां।रा०भु·न·सु·सीष्ठ·प्रज·क·सवी·नेर्दृ·श·वक·सि·कुरू·सि
मव्रं·सि·भू·वा।स्तानी वावा·मएुच्र·से·न·ए·१०।सिनी·जु·सि·जय·सेपा·ए·पा·स्व·सी·जु
·प्र·न·कुरू·को·बा।रूपा।कु·ह०।ए०।११।कुरू·मा·म·कु·मा·वि·म सुक्षा·येसा·इ·पि·धु·कि
य·इ·न·नयमी·मान्ति।१२।अस्य·न·द्रा।अ·पहीय·लि·न·धाने·न·कु·सं·क·य·प्रनं।१३।

पा॰ दृ॰ उर्व॰ स॰ २ वि॰ ग्रक॰ ज॰ पु॰ बि॰ हृ॰ स्क॰ प॰ । ग्रो॰ ध्र॰ न॰ नू॰ नए॰ सु॰ तः । रोथ्यो । ग्र॰ दीष्ट॰ नाना ति॰ २
वलि॰ म॰ म॰ त्र॰ मे॰ स्वे॰ नाष्ट । गो॰ ग्र॰ म॰ स्क॰ त॰ ए॰ ति॰ । ३ । दृ॰ न॰ रू॰ स्तुचा॰ ग्र॰ म॰ स॰ म॰ स्त॰ हू॰ म
स्त॰ पुरा॰ ४ । नाहृ॰ यामा । र॰ स॰ य॰ र॰ संत्रि॰ नि॰ स । स्त॰ गौरीज्वलि॰ प॰ गो॰ प्र॰ श॰ तस्या॰ ५ गोरी॰ ग्रा॰
नू॰ गो॰ र्वि॰ ऊ॰ हि॰ म । च वतु॰ र॰ स्वा॰ नव । स्वा॰ सवृ॰ प॰ तस्या॰ प॰ र । ६ । त स्मा॰ ग॰ ति॰ त॰ वृद्दि॰ त
सु । सु॰ गौ॰ त॰ ए पतिं । ७ गौर॰ उ॰ स्त॰ मि॰ । गो॰ नमी॰ हु॰ नि॰ वि॰ तमा॰ द्वि॰ त्रि॰ वी॰ मूर्द्धा॰ स्व॰ स॰ घ॰ हे
मि॰ मो॰ पु॰ दि॰ ना॰ घा । धेनु॰ षि॰ तस्याय । ८ । उ पू॰ ग्रे॰ उ॰ प॰ क॰ ग्रे॰ मे॰ सर्वे॰ स॰ षड॰ पद्दा॰ दधी॰ ना॰ पु
ग्राहृ॰ प॰ नि॰ ६ । सूय । ऊ॰ नी॰ सु॰ व॰ द्वित॰ स॰ वे॰ पि॰ व॰ ए॰ प॰ ए॰ १० हि॰ क॰ प॰ इ॰ पे॰ ष्या॰ प॰ तं
त॰ म॰ ११ । स्वलि॰ सा । पा॰ स्व॰ नी॰ धू । सा॰ हेम॰ दे॰ यां॰ ता॰ तः । त्म मि । द्वि॰ त्रि । विद्यु॰ स॰ षा॰ प॰ ग्रे॰ हू
॰ नात॰ ए॰ १४ । ग्रमि॰ उ॰ गो॰ सिष॰ हुः । ग्रमि॰ स्म॰ ह । त॰ मू॰ ग्र॰ ग्रा॰ ए॰ ज्यो॰ हे॰ री॰ प्रा॰ १ ए॰ या॰ ग्रा
सी॰ प्रा॰ त्र॰ ग्रा॰ सा॰ रोहू॰ सी । १६ । १५ । पाद॰ ग्रथा॰ पु॰ तास्ता॰ म । प्र॰ तो॰ ग्नि । स॰ वे॰ ज्यो॰ स्मो॰ ग्नि॰ ना राम॰
॰ स्त॰ हो॰ स॰ रा॰ स्त॰ ऊ॰ हु॰ म॰ स्म॰ वि॰ म॰ मा॰ सो॰ स्त॰ नि । वसा॰ पु॰ रा॰ तेर॰ तयोः स॰ गो॰ सं॰ र॰ वा॰ ता ८

8

प॰२॰ श।२हेह॰ रैः॰ हे॰ दू॰ वे।पा॰ ना॰ ज्ञि। ह्नुम॰ म॰ व॰ स्पो२पि॰ मध्यहि॰ ह्नु॰ प्र॰उ॰ स्त॰ रे॰ पूरा॰ ३। प्रातश्च
स॰ प्रा॰ वि॰ नाम॰ ने॰ रे॰ परा॰ ४। ज्ञान यी॰ श्रा॰ उ॰ न॰ प्राय॰ श्रुनु॰ मे॰ पू॰ ज्वे॰ स्तयोः॰ स॰ स्त॰ उष॰ उ।त
ह॰ ५॰ ५।उष॰ पे॰ हे।उ॰ म॰ध॰ न॰स॰ परा॰ ६। एताम्पू॰ नि॰ रः॰ एना॰ प्र॰ व॰ ता। ना। मि॰ ति॰ एमी॰ प्र
ति॰ द॰ न्या॰ मा॰ स॰ पत्नो। न॰ एम॰ ७। स्तु किं॰ श्रा॰ स्तु॰ स॰ सर्व॰ स्तु॰ श॰ ति किं॰ कं॰ प्र॰ शक्तिश्च
श्रसु स्तु॰ स्तु॰ स॰ त्वो॰ यच्च॰ पु॰ ए॰ म॰ ८ स्तुषा।धा। ष्ट॰ रे॰ स्तु॰ म॰ स्तु॰ स्तुवा।मा॰ स्व॰ प्रा॰ उ॰ ए॰ स्तीं॰
नु॰ उ॰ प्रि॰ हविः॰ सर्वां। स॰ प्रि।। श्रा॰ ए। जन॰ मा॰ प्र॰ प्रू॰ रू॰ प्र॰ वि॰ नोर्हि॰ श्रा। मे॰ गा॰ मस्तु॰ सं॰ म॰ ति

मनिसमा
१०। त्व प्रा॰ ताय॰ शर्व॰ ती॰ मे॰ सं॰ य॰ नाम॰ श॰ ए॰ नो॥२॥ पादः॥ सवि॰ स्त॰ घो॰ न से॰ म॰ ति १
गछंति १
विश्वा। वि॰ नि।स॰ ~~म॰ स॰ य॰ नो॰ म॰ श॰ स॰~~ ने प्रामे॰ कां॰ कांव॰ प्रि॰ द्वि॰ स्वच्छा। स्वधा॰ पूत्स॰ स॰०
क॰ दिस यु॰ व॰ त॰ से॰ तं॰ स्तु॰ क॰ स्तप्नि॰ द्व॰ क्रापे॰ क्री॰ सा॰ क॰ काल्या॰ छंकु॰ श॰ वच्च॰ स्त॰ का
॰ प्रा॰ ते॰ म॰ २ प्राती॰ नी। श्रा॰ हा।सा॰ क॰ व॰ यो॰ सर्व॰ श्रा॰ उ॰ म॰ ज॰ स्व॰ नर॰ गतिये॰ हा॰ २ प्रा॰ ए। जं॰
जनं। स॰ स्तु॰ स्ती॰ न से॰ ति॰ २ उद्॰ वः॰ ह॰ पे॰ उ॰ उ॰ रः॰ के॰ म॰ द॰ शी॰ सूर्ये॰ न॰ प॰ रो॰ ४ । चित्रं श्रा

१८

चा·।मु·गमद·रव्याने·श्वापू·चां·मू·जं·स्था·या·पो·मुषां·त·ति·५ मुक्रं·विष्णु·सर्वा·प्रनामांम
·भा·पृ·घनि·त·परा ६ पथ्यस्य·सब·पक्षि·का·म·के·स नोस्वायामाति·क·प्र·ति पूखे·हि·त·वि
श·त·स्य·भ ७ ।इ·ह·रोप·श्रि·घृ·दि·स·वि·ग·स·प्पा·पद्·पि·त्स·पा·४ रव·पद्·पा·पन्न·वा।
८।२ पाद·विष्वा·सासे·वुसै·स्या·१ विष्वान·स·।ना।वि·हि·ना·स्पै·च·पार्थ्या·बु·स्त·म·२ ये
ना·त·भु·रि·हि·भु·श्मभूम·स्वर्ग·लो·भु·न·हु·त·सा·३।येना·त्वं·विघ्या·पश्यु·वे·वि
र·ष्ट·म·केम हानि·भी·रा·स·सर्या·४।येना·त्वं·प्रसद·दे·शे।प्रसुद्धि·मभि·वा।५ येना·तं।०।
तेना·सिके शी वे·[illegible]·का·त·म·६·के शपु।ज्ञेके·वि·वि ष्णाघ्या।तिके।सर्वभि·के·स्यो·ड·म
हा या प्पे के।नीठ चे।भू·मास्त·रे·म।७ त्र मे·वि·पुत्र·कालेभि·स·प·मिस्य·सर्व·कामे·र
गति रे·पं चु·पु·र·ति·तद्·भी वु·स्त·मा।८।पुनरे·य·स्त·र·पु·या·सु·त्रा·पन्मा उ·न·स
र्व·स·सर्व·पा·पा·प्र·न·जए जन·ए·वे·पि·वै·ए·नि·त स्मै·वेष्वा चि·१०।पार्वदि·य·वुल राम
सर·ध्या।पवि·शत्मो·का·त·न्ना आ।ति।तद्·पा वी·हि·कुम·त्री वा चो·ऊ·श्चे·श्वि·सि·प·स ए

सुदि॰ स्सर्वैव॰ नीचुसहृ॰ सुंस्तु॰ प्र॰ धीपिः॰ कमे॰ मृ॰ वृद्ध॰ वृधि॰ ता॰ ए॰ नैं॰ र्सविः। २१ पदि॰ स्थः। ओ॰
स्य। र॰ सम्रु॰ तस्मिसे॰ पा॰ चि। २२ पवि॰ तंम॰ पवि॰ र॰ राम॰ पू र्मा॰ मपिते॰ अ॰ पुरा॰ कर्म॰ रोहं॰
स॰ रः॰ धु॰ कर्म॰ श्रा॰ मा॰ मज्ञ॰ नः॰ पृ॰ सम्रु॰ नसे॰ सप॰ चि २३। उत॰ वि॰ अपि॰ हि॰ स्त्रै
क॰ सुधि॰ सम्रु॰ स॰ देवाः॰ स्वस॰ प॰ रूप॰ मे॰ वि॰ द॰ ध्यद्रू॰ प्र॰ वाम्रम॰ रक्ता न॰ थर्वा॰ मनु॰ त्रे॰ मपृ॰
ग्रामवि ५ मसे। २४ पा॰ म॰ न॰ ज्या। पा॰ चुद॰ चे॰ त॰ वृश्र॰ ग्रामे। २५। ३ पादः। अ॰ था॰ घु॰ राम्॰ ह्ने॰ मा
॰ प्र॰ मा॰ तासे॰ म॰ १२०३ मा। गि॰ मृ॰ राः। घृतो। घ्रै॰ स्ता॰ स्ता॰ सारि॰ घृ॰ निम्न॰ ऊ॰ तोरा स्त्रि॰ गु
ह्ना॰ चि॰ रा॰ तिवाह्न॰ रमो॰ ह्॰ सि॰ धृम॰ म॰ वृधा॰ द॰ व॰ ते॰ श॰ शोमु॰ नः॰ सता॰ स्न ति २ सम
नय ४ द्दं॰ स॰ वो। सस्त॰ रत्न॰ आदि॰ स॰ द॰ स॰ मप्र॰ तः॰ स॰ स्तए॰ मादि॰ स॰ वोवा॰ वा॰ सम्र॰ ष लिं॰ वि॰ स॰
शरी॰ घति॰ नी॰ मा॰ त्मा॰ प्रा॰ तै॰ तेषा॰ परा॰ म॰ वुरि॰ देवा॰ तास्ते॰ ४७ देवाना॰ ता। से॰ दे॰ म॰
मता। वृन्तु॰ प्रनु॰ द्रा॰ सत्पा॰ दे॰ मदे॰ प्र॰ चि॰ स्तै॰ ५ ३ मा॰ द्रा॰ श्र वि॰ व॰ मनु॰ सर्वे॰ रदा॰ द
ते॰ द॰ सुत॰ मदे॰ वै॰ गा॰ पहु॰ द्रकु॰ न हैत्वा॰ पद॰ शा॰ रत॰ ध॰ श्रो॰ मे॰ सू॰ ब॰ दश॰ ते॰ ४८ मन्ते
गतिर्य॰ पां॰ अ॰ वृणति॰ विश्वरू॰ रित्यरश्म सा॰ नि॰ निर्य सर्व॰ सोदिता॰ षंति

न॒·ते॒ः· प॒त्ते॒· अ॒· अ॒· त्र· ता· ता· ते· सं॒खे॒· प॒· वाः॒ साधु· फ॒· दे॒· नै॒· पूर्वं· सु॒· सा· न॒व· प्रहि॒· स्त॒र्व· म
१० ·वे॒· हु॒· वो· स· ते॒स्य त्रृ· नां॒इ· वा॒समा· तस्मा· थ· आ॒ ह्रि·। श्रम॒ वित्र॒ घु· स्ते॒ यां· त्रि·७ सुगा· हृ॒णः
ज· स्मे· ह्रा· हु॒· प॒· घ॒· ते घा· प॒र ८· अ॒घा· अ॒· स्तु॒ स्तु॒ ज्यू· उमा· भवा· मे· प· स्तु॒ष्ट्राः। अ॒ना·
कु॒· ष्टृ· ग्ने· स्ते· ९ शं॒नो॒काः॒· जं· वः॒· स्व॒वा· दे॒· स्व॒· सं॒· स्व॒चे॒· स्व॒· प्र॒· जुं· ह॒· चह्नि· चा· देवा॒· दे॒·
स्त्रा· प्र· भ १० देवानां प· प्र· ७ दे॒ वा· प· उ· पा· ने॒प· वा· सं· नेना· घ। अ॒ पा· क· ता· ग॒· ता
·मे· पुरा· ११। उत· ८ आ· नो· अपि· इू॒ ह्र· ग्र॒मा· पत्र॒ष्वि॒ म· प· रा· रे॒· वा· व॒ह॒· ख॒· म· ना
मा ना ११४ हृः। अथापि·। इति द्वादशोध्यायः। निरुक्त उत्तरार्धं समाप्तिमगमत्॥ त्र· आत्माराम स्येद॥